The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

47. धर्मशास्त्र और जाति व्यवस्था

खुशबू सिंह
शोध छात्र, प्राचीन इतिहास संस्कृत एवम्
पुरातत्व विभाग, महाराजा सुहेलदेव विश्वविद्यालय आजमगढ़।

सारांश

भारतीय समाज की संरचना में धर्मशास्त्र और जाति व्यवस्था का गहरा प्रभाव रहा है। धर्मशास्त्र वे ग्रंथ हैं जिनमें जीवन के नैतिक, धार्मिक और सामाजिक नियमों का उल्लेख मिलता है। इनका उद्देश्य समाज को अनुशासित करना और लोगों को उनके कर्तव्यों की ओर प्रेरित करना था। धर्मसूत्रों और स्मृतियों में विवाह, उत्तराधिकार, दंड व्यवस्था और आचार संहिता जैसी बातें विस्तार से लिखी गई। मनुस्मृति जैसे ग्रंथों ने समाज को चार वर्णों में बाँटकर प्रत्येक के लिए अलग-अलग कर्तव्य निर्धारित किए। ब्राह्मणों को ज्ञान और शिक्षा का कार्य, क्षत्रियों को शासन और रक्षा का कार्य, वैश्य को व्यापार और कृषि का कार्य तथा शूद्र को सेवा का कार्य सौंपा गया। प्रारंभिक काल में यह विभाजन कर्म और गुण पर आधारित था। यानी व्यक्ति अपने कार्य और योग्यता के अनुसार समाज में स्थान पा सकता था। लेकिन धीरे-धीरे यह व्यवस्था जन्म-आधारित हो गई। व्यक्ति का सामाजिक दर्जा उसके जन्म से तय होने लगा और यही जाति व्यवस्था का स्थायी रूप बन गया। धर्मशास्त्रों ने इस व्यवस्था को वैधता दी और इसे समाज में स्थिरता बनाए रखने का साधन माना। जाति व्यवस्था ने समाज को स्थायी पहचान दी, लेकिन इसके साथ ही असमानता और भेदभाव भी गहराया। विभिन्न जातियों को विशेष व्यवसायों से जोड़ा गया और उन्हें स्वधर्म का पालन करने के लिए बाध्य किया गया। कुछ जातियों को अस्पृश्य घोषित कर दिया गया, जिससे वे समाज से बाहर कर दी गई। इसने सामाजिक गतिशीलता को रोक दिया और व्यक्ति को अपने जन्म से बँधे हुए दायरे में सीमित कर दिया। समय के साथ इस व्यवस्था की आलोचना भी हुई। बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने जन्म-आधारित भेदभाव को चुनौती दी। भक्ति आंदोलन ने ईश्वर की भक्ति को जाति से ऊपर रखा और समानता का संदेश दिया। सिख धर्म ने भी जाति व्यवस्था को अस्वीकार किया। आधुनिक काल में भारतीय संविधान ने अस्पृश्यता को समाप्त किया और सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए। धर्मशास्त्रों ने समाज को नैतिक और कानूनी ढाँचा दिया, जबकि जाति व्यवस्था ने इसे स्थायी सामाजिक पहचान में बदल दिया। प्रारंभिक लचीलापन धीरे-धीरे कठोरता में बदल गया, जिससे सामाजिक असमानता और भेदभाव गहराया। आज यह व्यवस्था कानूनी रूप से समाप्त हो चुकी है, लेकिन इसके सामाजिक प्रभाव अब भी मौजूद हैं। आधुनिक भारत में शिक्षा, सुधार आंदोलनों और संवैधानिक प्रावधानों ने समानता की दिशा में कदम बढ़ाए हैं, जिससे समाज अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी बनने की ओर अग्रसर है।

प्रमुख शब्द

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

धर्मशास्त्र, धर्मसूत्र, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, वर्णसंकर, अस्पृश्यता, स्वधर्म, स्त्रीधन, भक्ति आंदोलन, बौद्ध धर्म, सिख धर्म।

भूमिका

भारतीय समाज की संरचना में जाति व्यवस्था एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल तत्व रही है। इसकी जड़ें प्राचीन धर्मशास्त्रों और स्मृतियों में गहराई से निहित हैं। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति जैसे ग्रंथों ने सामाजिक जीवन के नियमों और आचार संहिताओं को निर्धारित किया, जिनमें जाति आधारित विभाजन को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया। इन धर्मशास्त्रों ने न केवल धार्मिक आचरण को नियंत्रित किया बल्कि शिक्षा, विवाह, व्यवसाय और सामाजिक पदानुक्रम तक को प्रभावित किया।जाति व्यवस्था का यह स्वरूप जन्म आधारित पहचान और शुद्धता-अशुद्धता की अवधारणा पर आधारित था, जिसने समाज को स्थायी रूप से विभिन्न वर्गों में बाँट दिया। धर्मशास्त्रों के माध्यम से यह व्यवस्था इतनी गहराई से स्थापित हुई कि यह केवल धार्मिक नियमों तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक और आर्थिक जीवन का भी आधार बन गई। हालाँकि, समय के साथ इस व्यवस्था की आलोचना भी हुई। बौद्ध और जैन धर्म ने समानता और करुणा का संदेश देकर जाति व्यवस्था को चुनौती दी। भक्ति आंदोलन के संतों ने भी जाति आधारित भेदभाव का विरोध किया। आधुनिक काल में संविधान और कानूनों ने जाति व्यवस्था को समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन इसके ऐतिहासिक प्रभाव आज भी भारतीय समाज में दिखाई देते हैं।

धर्मशास्त्रों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय समाज की संरचना को समझने के लिए धर्मशास्त्रों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। धर्मशास्त्र केवल धार्मिक आचार संहिता तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन को भी दिशा दी। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति और अन्य ग्रंथों ने समाज के विभिन्न वर्गों के लिए नियम और कर्तव्य निर्धारित किए।मनुस्मृति को प्राचीन भारत में सबसे प्रभावशाली ग्रंथ माना जाता है, जिसमें वर्ण व्यवस्था को जन्म आधारित पहचान से जोड़ा गया। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए अलग-अलग कर्तव्यों और अधिकारों का उल्लेख मिलता है। याज्ञवल्क्य स्मृति और नारद स्मृति ने भी सामाजिक जीवन के नियमों को विस्तार दिया, विशेषकर विवाह, उत्तराधिकार, और न्याय व्यवस्था से संबंधित प्रावधानों में।इन धर्मशास्त्रों का उद्देश्य समाज में स्थिरता और अनुशासन बनाए रखना था। लेकिन इस स्थिरता की कीमत सामाजिक गतिशीलता और समानता के अभाव के रूप में चुकानी पड़ी। धर्मशास्त्रों ने जाति आधारित पदानुक्रम को वैधता प्रदान की और इसे धार्मिक आदेश का रूप दिया।इस प्रकार, धर्मशास्त्रों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य यह दर्शाता है कि वे केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं थे, बल्कि सामाजिक संरचना को स्थायी रूप से प्रभावित करने वाले दस्तावेज थे।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

धर्मशास्त्रों में जाति का स्वरूप

धर्मशास्त्रों में जाति व्यवस्था को केवल सामाजिक विभाजन के रूप में नहीं, बल्कि धार्मिक और नैतिक कर्तव्यों के आधार पर परिभाषित किया गया। मनुस्मृति और अन्य स्मृतियों में यह स्पष्ट किया गया कि प्रत्येक जाति का जन्म से ही एक निश्चित स्थान और भूमिका होती है।

जन्म आधारित पहचान- मनुस्मृति में जाति का निर्धारण जन्म से किया गया, जिससे सामाजिक गतिशीलतालगभग असंभव हो गई।ब्राह्मण को ज्ञान और पूजा का अधिकार, क्षत्रिय को शासन और रक्षा का कार्य, वैश्य को व्यापार और कृषि, तथा शूद्र को सेवा कार्य सौंपा गया।

कर्म और धर्म का निर्धारण- प्रत्येक जाति के लिए विशिष्ट कर्तव्य (धर्म) निर्धारित किए गए।उदाहरण: ब्राह्मणों के लिए वेदाध्ययन और यज्ञ, क्षत्रियों के लिए युद्ध और शासन, वैश्य के लिए व्यापार और कृषि, शूद्रों के लिए सेवा।

शुद्धता और अशुद्धता की अवधारणा- धर्मशास्त्रों में शुद्धता और अशुद्धता का विचार जाति व्यवस्था से गहराई से जुड़ा था।उच्च जातियों को धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने का अधिकार था, जबकि निम्न जातियों को कई धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों से वंचित रखा गया।

सामाजिक नियंत्रण -विवाह, भोजन, और शिक्षा तक जाति आधारित नियम लागू किए गए।अंतर्जातीय विवाह और भोजन को निषिद्ध माना गया, जिससे जाति व्यवस्था और कठोर हो गई।

इस प्रकार धर्मशास्त्रों में जाति का स्वरूप केवल सामाजिक पहचान तक सीमित नहीं था, बल्कि यह धार्मिक आदेश और नैतिक कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। इससे जाति व्यवस्था को वैधता और स्थायित्व मिला, जो भारतीय समाज में सदियों तक कायम रहा।

धर्मशास्त्रों का सामाजिक प्रभाव

धर्मशास्त्रों ने भारतीय समाज की संरचना को गहराई से प्रभावित किया। इन ग्रंथों में वर्णित नियम केवल धार्मिक आचार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने शिक्षा, विवाह, व्यवसाय और सामाजिक पदानुक्रम को स्थायी रूप से नियंत्रित किया।

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

शिक्षा पर प्रभाव - ब्राह्मणों को वेदाध्ययन और धार्मिक ज्ञान का अधिकार दिया गया।शूद्रों और अन्य निम्न जातियों को शिक्षा से वंचित रखा गया, जिससे ज्ञान तक पहुँच सीमित हो गई।

विवाह और सामाजिक संबंध- अंतर्जातीय विवाह को निषिद्ध माना गया।विवाह संबंधों को जाति आधारित नियमों से बाँधकर सामाजिक गतिशीलता को रोका गया।

व्यवसाय और आर्थिक जीवन- प्रत्येक जाति के लिए विशिष्ट व्यवसाय निर्धारित किए गए।ब्राह्मणों को धार्मिक कार्य, क्षत्रियों को शासन और युद्ध, वैश्य को व्यापार और कृषि, तथा शूद्रों को सेवा कार्य सौंपा गया।इससे आर्थिक अवसरों में असमानता स्थायी हो गई।

सामाजिक पदानुक्रम - धर्मशास्त्रों ने जाति व्यवस्था को धार्मिक वैधता प्रदान की।उच्च जातियों को विशेषाधिकार मिले, जबकि निम्न जातियों को सामाजिक रूप से हाशिये पर रखा गया।

स्थायित्व और नियंत्रण - धर्मशास्त्रों के नियमों ने समाज में स्थिरता और अनुशासन बनाए रखा।लेकिन इस स्थिरता की कीमत सामाजिक समानता और न्याय के अभाव के रूप में चुकानी पड़ी।

इस प्रकार धर्मशास्त्रों का सामाजिक प्रभाव यह दर्शाता है कि उन्होंने जाति व्यवस्था को केवल धार्मिक आदेश नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक जीवन का आधार बना दिया। यही कारण है कि जाति व्यवस्था सदियों तक भारतीय समाज में गहराई से जमी रही।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण

धर्मशास्त्रों द्वारा स्थापित जाति व्यवस्था को समय-समय पर विभिन्न धार्मिक आंदोलनों, संतों और आधुनिक विद्वानों ने चुनौती दी है। यह आलोचनात्मक दृष्टिकोण समाज में समानता और न्याय की खोज को दर्शाता है।

बौद्ध और जैन धर्म की आलोचना-बुद्ध ने जाति व्यवस्था को अस्वीकार करते हुए कहा कि मनुष्य का मूल्य उसके कर्म से है, जन्म से नहीं।महावीर ने भी करुणा और अहिंसा पर बल दिया, जिससे जाति आधारित भेदभाव को चुनौती मिली।इन धर्मों ने समानता और सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश दिया।

भक्ति आंदोलन का विरोध -कबीर, रविदास, तुलसीदास जैसे संतों ने जाति व्यवस्था की कठोरता पर प्रश्न उठाए।कबीर ने कहा – "जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान"।भक्ति आंदोलन ने आध्यात्मिक समानता को जाति से ऊपर रखा।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

आधुनिक विद्वानों का विश्लेषण- डॉ. भीमराव आंबेडकर ने धर्मशास्त्रों को जाति व्यवस्था का मूल कारण बताया और इसे सामाजिक अन्याय का स्रोत माना।आधुनिक समाजशास्त्रियों ने धर्मशास्त्रों को सामाजिक स्थिरता का साधन तो माना, लेकिन साथ ही इसे सामाजिक गतिशीलता और समानता के लिए बाधा भी बताया।

समकालीन आलोचना - आज के संदर्भ में धर्मशास्त्रों की जाति आधारित व्यवस्था को मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध माना जाता है।संविधान ने समानता का अधिकार देकर धर्मशास्त्रों की जाति आधारित अवधारणाओं को चुनौती दी।

इस प्रकार आलोचनात्मक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि धर्मशास्त्रों ने जहाँ समाज को स्थिरता दी, वहीं उन्होंने सामाजिक असमानता को भी स्थायी बना दिया। विभिन्न धार्मिक आंदोलनों और आधुनिक विचारकों ने इस व्यवस्था को चुनौती देकर समानता और न्याय की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया।

समकालीन संदर्भ

धर्मशास्त्रों में वर्णित जाति व्यवस्था का प्रभाव आज भी भारतीय समाज में दिखाई देता है, यद्यपि आधुनिक संविधान और कानूनों ने इसे चुनौती दी है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने समानता का अधिकार दिया और जाति आधारित भेदभाव को अवैध घोषित किया। आरक्षण नीति के माध्यम से शिक्षा, रोजगार और राजनीति में पिछड़े वर्गों को अवसर प्रदान किए गए।

संवैधानिक प्रावधान - अनुच्छेद 14, 15 और 17 ने समानता, भेदभाव निषेध और अस्पृश्यता उन्मूलन को सुनिश्चित किया।आरक्षण नीति ने दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और रोजगार में प्रतिनिधित्व दिया।

सामाजिक परिवर्तन - शहरीकरण और औद्योगीकरण ने जाति आधारित व्यवसायों को कमजोर किया।आईटी और वैश्विक अर्थव्यवस्था ने नई सामाजिक गतिशीलता पैदा की।

चुनौतियाँ- ग्रामीण क्षेत्रों में जाति आधारित भेदभाव अब भी मौजूद है।शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में असमानता बनी हुई है।राजनीतिक स्तर पर जाति पहचान अब भी चुनावी रणनीतियों का हिस्सा है।

धर्मशास्त्रों की प्रासंगिकता - आज धर्मशास्त्रों को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन के रूप में देखा जाता है, न कि सामाजिक नियमों के रूप में।आधुनिक समाज में उनकी भूमिका आलोचनात्मक दृष्टि से समझी जाती है, ताकि जाति व्यवस्था के ऐतिहासिक आधार को समझा जा सके।

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

इस प्रकार समकालीन संदर्भ यह दर्शाता है कि धर्मशास्त्रों की जाति व्यवस्था आज कानूनी रूप से अस्वीकार की जा चुकी है, लेकिन उसके सामाजिक प्रभाव अब भी भारतीय समाज में गहराई से मौजूद हैं। आधुनिक नीतियाँ और आंदोलन इस ऐतिहासिक विरासत को चुनौती देकर समानता और न्याय की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

निष्कर्ष

धर्मशास्त्रों ने भारतीय समाज की संरचना को गहराई से प्रभावित किया। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति और अन्य ग्रंथों ने जाति व्यवस्था को धार्मिक वैधता प्रदान की और इसे सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बना दिया। शिक्षा, विवाह, व्यवसाय और सामाजिक पदानुक्रम तक जाति आधारित नियमों ने समाज को स्थिरता तो दी, लेकिन समानता और न्याय की राह को अवरुद्ध कर दिया।समय के साथ बौद्ध और जैन धर्म, भक्ति आंदोलन तथा आधुनिक विचारकों ने इस व्यवस्था की आलोचना की और समानता का संदेश दिया। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने जाति आधारित भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन इसके ऐतिहासिक प्रभाव आज भी समाज में दिखाई देते हैं।इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि धर्मशास्त्रों की जाति व्यवस्था केवल अतीत का हिस्सा नहीं है, बल्कि उसने आधुनिक भारत की सामाजिक चुनौतियों को भी आकार दिया है। इसलिए जाति व्यवस्था को समझने के लिए धर्मशास्त्रों का विश्लेषण आवश्यक है, ताकि हम अतीत की गलतियों से सीखकर भविष्य में एक अधिक समानतापूर्ण और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकें।

संदर्भ सूची

1. आंबेडकर, भीमराव रामजी.जाति का उन्मूलन. नई दिल्ली: नवयाना, 2014.
2. डोनिगर, वेंडी.मनुस्मृति के नियम.लंदन: पेंगुइन क्लासिक्स, 1991.
3. झा, डी. एन.प्राचीन भारत:ऐतिहासिक रूपरेखा. नई दिल्ली: मनोहर पब्लिशर्स, 2004.
4. केन, पी. वी.धर्मशास्त्र का इतिहास(प्राचीन और मध्यकालीन धार्मिक एवं नागरिक कानून). खंड II. पुणे: भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, 1941.
5. ओलिवेल, पैट्रिक.मनु का धर्मशास्त्र: आलोचनात्मक संस्करण और अनुवाद. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005.
6. शर्मा, राम शरण.प्राचीन भारत में शूद्र: ई. सन् 600 तक निम्न वर्ग का सामाजिक इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1990.
7. थापर, रोमिला.प्रारंभिक भारत: उत्पत्ति से ईस्वी 1300 तक. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002.
8. विल्करसन, इसाबेल.जाति: हमारे असंतोष की उत्पत्ति. नई दिल्ली: एलेन लेन, 2020.
9. याज्ञवल्क्य स्मृति. अनुवाद: मन्मथ नाथ दत्त. कलकत्ता: एलिसियम प्रेस, 1908